अनिश्वरवादी धर्मो का उद्भव एवं विकासएक अध्ययन

जी0एल0ए0 कॉलेज, मेदिनीनगर,
स्नातकोत्तर विभाग,
दर्शन शास्त्र
वर्ष–2018–20
में प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध

प्रस्तुताः

नाम–श्वेत निशा कुमारी
रौल–18MA1002301
पंजीयन–NPU/06151/13

शोध निर्देशिका
डा0 सरिता कुमारी
अध्यक्ष
स्नातकोत्तर, दर्शन शास्त्र विभाग,
एन0पी0यू0 मेदिनीनगर,

Sarita Kumari

HEAD
Department of Philosophy
N.P. University, Medininagar

अपनी बात

मैंने अनीश्वरवादी धर्मो का उद्भव एवं विकास पर लघु शोध प्रबंध लिखने का निर्णय लिया।

इसके पिछे मेरा उद्येश्य बौद्ध एवं जैन दर्शन में अनीश्वरवादी विचारधारा का उद्भव एवम् विकास का अवबोध प्राप्त करना है।

सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशक आदरणीय डॉ सरीता कुमारी जी के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होने अपने मनोयोग से इस शोध प्रबंध को पुरा करने में मेरी सहायता की। इस कार्य को करने के क्रम में मुझमें कार्य संस्कृति का अभ्युदय हुआ । और साथ ही साथ नियमित कार्य करने की प्रेरणा मिली। उनकी डांट और उलाहनाओं ने मुझमें दायित्व का भाव जाग्रित किया। मेरे अशुद्ध लेखन के लिए मुझे डांट भी पड़ती थी। जो मेरे वैचारिक परिमार्जन हेतु अपेक्षित था। मैं हृदय से उनकी सदृदयंता और मेरे अंदर ज्ञान के आलोक प्रसरण करने हेतु अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

मैं डॉ शिवपूजन प्रसाद सिंह का भी आभार व्यक्त करती हूँ क्योंकि उन्होनें ने भी इस कार्य में मेरी सहायता की।

मैं आभार व्यक्त करता हूँ ~~मिथलेश~~ विभेश कुमार चौबे जी का जिन्होने–जिन्होने समय–समय पर मेरे कार्य को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर रहें।

मैं आभार हूँ अपने माता–पिता जी का जिन्होने मेरे लालन–पालन से लेकर अध्यापन में न मात्र मार्ग दर्शन किया, अपितुः पग–पग पर मेरी सहायता की।

अंत में मैं परम पिता परमेश्वर को धन्यवाद देती हूँ जिन्होने मुझे बुद्धि–विवेक दिया। जिसके कारण मैं यहाँ तक पहुँच पायी।